

५. गांधीजी का व्यवसाय क्या हुआ था और क्या पर ध्यान था?

दक्षिण आफ्रिका में गांधीजी ने कई बार बेलपांश होस्टलों
जुलानी काया पाठे लर व्यवसाय था। उनके हाथों में पहरेदारों
आवी. वनी पहरेदारों ^{हाथों में} जो पोलो पोतानी साथे वांयवा राफेली सोपरी पोतना
हाथों में पडसाववा डेपुं. पोलो हाथों में न देखाय की रीते सोपरी
पडसावी. पोते हाथों में शिवाय के रीते पोलो पाठे ^उ न
गांधीजी ने पोलो सहित डेपुं पाठे. मेगापुनोरा के वां ^उ साथे ने
सोपरी वांयवा पाठे राफेली ने इती पहरेदारों लोहरतोय - इति "प्रभुने
हरवार तारा हृदयों में" (धु डिंगल जोड़ गोंड धर्म विधि
यु). गांधीजी पोतना पोलो यिंतकी रह्या : जो डुं पाठे हृदय
शुद्ध पोलो, ~~अने~~ निरंतर सोपरी राफेली तो प्रभु जो
वासो वसे जो पवित्र राफेली तो पकी ललेने डुं
गोते नेवी लोडों आवी पडुं तो पूरा पने शी परवा ?
अशियाना गांधी आफ्रिका में ने लोडों युरोपना
परागुलापने दिनां सक्षी राफेली व्यवसाय शुद्धिने सरम
सागासी पहरेदारों मानवगतने व्यवसाय हाथों में
पहरेदारों विना के रीते मंगल वृत्ति हृदयों में प्रसती गरी.

विमलेश्वर जी

६-२-१९७०